पुस्तक का नाम- मल्लवधू.

प्रकाशन-तिथि- जनवरी, सन् १९६५ ई०

पुरस्कार का नाम- प्रेमचन्द पुरस्कार (कहानी संग्रह).

लेखक का नाम तथा पता- भिक्षु धर्मरक्षित, सारनाथ,
वाराणसी. (उत्तर प्रदेश)

मल्ल-वधू

भिक्षु धर्मरक्षित

प्रकाशक
नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स
बाँसफाटक, वाराणसी।

समर्पण

अपने दिवंगत पितृव्य वैष्णव सन्त

बाबा मंगलदास

की

पुण्य स्मृति में

जिन्होंने बचपन में मुझे विद्याध्ययन के लिये
प्रेरित किया तथा अन्त में अपनी
सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी
घोषित करते हुए मंगल-
कामना की

वस्तुकथा

प्राचीन भारत के इतिहास में गणतंत्रों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। छठीं शताब्दी ईसवी पूर्व में उत्तर भारत के गणतंत्रों में मल्ल गणतंत्र एक शक्तिशाली एवं आदर्श प्रजातंत्र था, जिसका विस्तृत वर्णन पालि त्रिपिटक तथा अट्ठकथाग्रन्थों में विद्यमान है। इस गणतंत्र की स्थापना सम्भवतः ईसवी पूर्व दसवीं शताब्दी में हुई थी और पश्चिम से आर्यों ने आकर इसे प्रजातंत्र की ईकाई का रूप दिया था। उन्हें इसके लिये संघर्ष करने पड़े थे और अनेक प्रकार के कष्ट भी सहने पडे थे। उन्होंने कुशीनारा को इसकी राजधानी बनाया था। पीछे पावा नगर भी एक शासन-केन्द्र बन गया और इस प्रकार मल्ल जनपद एक प्रजातंत्र होते हुए भी दो शासन-सूत्रों मे विभक्त हो गया था। यह घटना अनुमानतः सातवीं शताब्दी ईसवी पूर्व में घटी थी। उसके सौ वर्षों के पश्चात् मल्ल जनपद काफी समृद्ध हो गया था और उसी समय भगवान् बुद्ध का आविर्भाव हुआ था। उनके उपदेश से प्रभावित होकर बहुसंख्यक मल्ल जाति बौद्ध हो गई थी। उसी समय कुशीनगर का बन्धुल मल्ल कोसल-नरेश प्रसेनजित् का सेनापति था। ईसवी पूर्व ५४३ में कुशीनारा में भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण होने के उपरान्त बन्धुल मल्ल की विधवा पत्नी मल्लिका ने अपने महालता प्रसाधन नामक आभूषण को भगवान् की रथी पर अर्पित कर दिया था। उस समय राजधानी कुशीनारा की

शोभा, शालवन उपवत्तन, हिरण्यवती की कलकल धारा, मुकुट-बन्धन चैत्य, खाणुका नदिका की चंचलता तथा नगर की वीथि, आपण, संस्थागार आदि के अलंकार एवं रूपसज्जा अवलोकनीय थे। दास-दासी मुक्त होकर भिक्षु-भिक्षुणी-संघों के सदस्य बन रहे थे। उस समय मल्ल जनपद के अन्य नगर--अनूपिया, थूणग्राम, उरुवेलकप्प, पावा, भोगनगर, अम्बग्राम, जम्बूग्राम आदि भी अपने त्याग, धार्मिकता एवं समृद्धि के लिये प्रसिद्ध थे। भगवान् बुद्ध के जीवन के अन्तिम दिन मल्ल जनपद के ग्रामों में ही व्यतीत हुए थे। उन्होंने अन्तिम भोजन पावा मे चुन्द कर्मारपुत्र के यहाँ ग्रहण किया था और अन्तिम साँस कुशीनारा के शालवन उपवत्तन के यमक-शालवृक्षों के नीचे ली थी। अन्तिम उपदेश वहीं किया था तथा वहीं की भूमि, वायु, जल तथा अग्नि में उनका पार्थिव शरीर विलीन हो गया था। यह इस जनपद के लिये गौरव की बात थी। वास्तव में प्रथम बुद्ध-शासन का संगठन-कार्य यहीं प्रारम्भ हुआ था, जब कि महाकाश्यप ने भिक्षुओं को प्रेरित किया था कि हम बुद्ध-वचन का संगायन करें और राजगृह की सप्तपर्णी गुहा में संगायन करने के लिये ५०० भिक्षुओं का निर्वाचन हुआ था।

भगवान् बुद्ध के जीवन-काल में तथा उनके पश्चात् भी भिक्षुओं एवं सार्थवाहों द्वारा बौद्धधर्म का प्रसार होता ही रहा। यद्यपि बुद्ध-महापरिनिर्वाण के थोड़े ही दिनों के उपरान्त मल्ल जनपद मगध राजतंत्र का अंग हो गया था, जिसपर शिशुनाग, मौर्य आदि राजाओं का शासन बना रहा, किन्तु वहाँ की जनता मे धार्मिक चेतना बनी रही। इतिहास करवट बदलता गया,

परिस्थितियाँ विषम तथा अनुकूल होती रही और संसार की गतिशीलता में मल्ल जनपद का स्वरूप-परिवर्तन जारी रहा। दसवीं शताब्दी ईसवी पूर्व से लेकर आधुनिक काल तक इस जनपद में कैसे-कैसे परिवर्तन हुए और यहाँ की जनता को किन-किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा—इन सब बातों का दिग्दर्शन १५ कहानियों में कराया गया है।

ये कहानियाँ मल्ल जनपद से ही सम्बन्धित हैं, किन्तु इनसे तत्कालीन सम्पूर्ण उत्तर भारत के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी अपने काल का प्रतिनिधित्व करती है। उससे उस काल के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण का आभास होता है। छठीं शताब्दी ईसवी पूर्व की ही केवल दो कहानियाँ एक काल की हैं—(१) मल्ल-वधू और (२) चुन्द, किन्तु दोनों के माध्यम से दो विभिन्न वातावरण को प्रस्तुत किया गया है और यही दोनों कहानियाँ ऐतिहासिक भी हैं। शेष सभी काल्पनिक हैं, किन्तु ऐतिहासिक तथ्य को प्रगट करने के लिये नाम, स्थान आदि प्राय: तत्कालीन प्राप्त लेखादि से लिये गये हैं।

मल्ल जनपद की सीमा क्या थी? यह उस समय तक निश्चित रूप से नहीं बतलाया जा सकता, जब तक कि किसी ग्रन्थ या लेख में सीमा-निर्देश प्राप्त न हो जाय। डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल का कथन है कि मल्ल जनपद गोरखपुर जिले से लेकर पटना के आसपास तक चला गया था[१]। पालि ग्रन्थो

१. हिन्दू राजतंत्र भाग १, पृष्ठ ७४।